ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' १७८ म अंक १५ मइ २०१५ (वर्ष ८ मास ८९ अंक १७८)

ऐ अंकमे अछि:-

पल्लवी- दूटा विहनि कथा
राम विलास साहुक दोसर कविता संग्रह- कर्म बिनु जग सुन्ना
/ किछु विहनि कथा

चोरविद्या

सुति कऽ उठले रही कि रधिया दादी मुहेँ सुनलौं-

“रज विद्यासँ चोर विद्या भारी होइ छै।”

रातियेमे आकि भोरमे कियोहुनकर टाट परहक सजमनि चोरा कऽ तोड़ि नेने रहन्हि तँए गारियो पढ़ैत रहथिन आ बजबो केली जे ‘रज विद्यासँ चोर विद्या भारी।’

शनि दिन रहने भिनसुरके स्कूल रहए। मास्टर साहैबसँ पुछलियनि-

“सरजी, चोर विद्या केकरा कहै छै?”

सरजी कहलनि-

“जइ विद्यासँ चोर चोइर करैए सएह भेल चोर विद्या।”

ISSN 2229-547X VIDEHA

फ्रेण्ड

हमरा अँगनाक ऐंठारपर एकटा पौरकी आ एकटा मेना चरौर करए आएल। से कोनो आइए नै आएल, अबिते रहैए। लगेक बँसबीटमे रहबो करैए।

भोर होइते पहिने पौरकी उठैए। पछाति मेना। मेनाकेँ संग करैत घरसँ दुनूटा निकलैए।

एकठाम रहने दुनूमे बेवहरिक सरोकार तँ छै मुदा ने जाति छै, जे एक टाइटिल रहितै आ ने एक रंगक अछि, जे जातियो रहितए। ओना जातियोमे रंगरंगक टाइटिल तँ चलिते छै।

भिनसुरका तोरक भोजन केला पछाति मेना पौरकीकेँ कहलक-

"गौआँ, दुनू गोरे फ्रेण्ड लगा लिअ।"

मेनाक बात सुनि पौरकी कनीकाल मने-मन हिसाव जोड़लक। तँ बूझि पड़लै जे भलें एके ढेरीपर दुनू गोरेक गुजर किए ने चलैत हुअए मुदा दुनू गोरेक खान-पान तँ एक नइ अछि। ओ साकठ अछि आ अपने वैष्णव छी।

पौरकी असमंजसमे पड़ि गेल।

मेना पुछलकै-

"गौआँ, सोझहे फ्रेण्ड लगेबह आकि ओकर नीको-बेजाए फरिछा लेबह?"

पौरकीक विचार मेनाकेँ जँचलै।

बाजल-

"गौआ, अहाँकेँ दुश्मन बेसी अछि, हमरा कम अछि। लाभ बेसी अहींकेँ अछि, जे जखन दुश्मन औत तँ हम अढ़ कऽ लेब।"

पौरकी बाजल-

"दछिनमुहेँ-गंगाजी दिस घुमि दुनू गोरे पहिने सप्पत खाउ, तखन फ्रेण्ड लगाउ।"

नोट- ऐ कथाकेँ लिखैमे हमर बाबा- श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक सहयोग भेटल अछि। हुनका प्रणाम्। संगे अहूँ सभकेँ प्रणाम्।

राम विलास साहुक दोसर कविता संग्रह- कर्म बिनु जग सुन्ना

रामविलास साहु
कविता

कर्म बिनु जग सुन्ना

सूर्ज बिनु अकास सुन्ना
बिजुरी बिनु वादल सुन्ना
जीव बिनु धरती सुन्ना
कोयल बिनु वगिया सुन्ना
फूल बिनु फुलवारी सुन्ना
शेर बिनु वन सुन्ना
नयन बिनु जग सुन्ना
प्राण बिनु देह सुन्ना
प्राजा बिनु राज्य सुन्ना
सत्य बिनु न्याय सुन्ना
वाद्य बिनु संगीत सुन्ना
नारी बिनु समाज सुन्ना
दूध बिनु भोजन सुन्ना
पानि बिनु नदी सुन्ना
देव बिनु मंदिर सुन्ना
दया बिनु धर्म सुन्ना
प्रेम बिनु भक्ति सुन्ना
कर्म बिनु जग सुन्ना।

रौदी

माथपर हाथ धेने
खेतिहरक आँखिसँ गिरलै नोर
धरती सुखलै धान जरलै
खेतमे फटलै दरारि
सुखले साउन-भादौ बितलै
खेतिहरक नसीब फुटलै
खेतसँ उड़ै छै धूल
जरैत खेत देखि दिल जरैत
जरि गेलै सबहक तकदीर
की खेबै अपना
की खेतै धिया-पुता
सोगसँ घटलै शरीर
पूर्वा-पच्छिया फोंक गेलै
सभ नक्षत्र बनलै ठक
ऋृतु बदललै मौसम बदललै
धतरीक दरारि फटले रहलै
पानि बिनु सभ जीब
तेजै छै नित्य परान
रौदी-दाही बहुते देखलौं
एहेन जुलुम कहियो नै देखलौं
अछैतै ओरूदे गेलै परान
ई मुसिबत के हरि लेतै
जखन भगवान, सरकार
दुनू बेमुख बनल छै
खेतिहारक दुख के पतिएतै
मांगै छै पानि तँ
डीजलक अनुदान भैटै छै।

ISSN 2229-547X VIDEHA

सिम्मर केर फूल

लाल-लाल सिम्मर-फूल
देखि सुग्गा ललचाइ
फूल रंग भोगार भेल
सुगा गेल लुभाइ
अपन उद्देश्य बिसरि
सिम्मरकेँ सोइरी लेलक बनाइ
सोइरी सेबैत-सेबैत सुग्गाकेँ
चिल्का गेल हेराइ
फूलसँ फलसँ बनैत धरि
सुग्गा रहल उपास
फल एहेन ललिचगर
लोल मारिते उड़ि जाए
सुग्गाक उपास नै टुटल
पारनमे की खाएत
आश लगौने सुग्गा
सिम्मरपर भेल निरास
लोभमे फँसि सुग्गा
अपने कर्मपर पचताए
शोगाएल सुग्गा बाजल
रूप रंग देखि नै लोभाउ
रूपक माया जाल फँसि
भुखले तेजब प्राण।

ओलंपिक

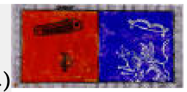
बच्चासँ बूढ़ भेलौं
बड़-बड़ खेल देखैत रहलौं
पैंसठ बरख आजाद्योिक भेल
मुदा पूर्ण आजादी
कहियो ने देखलौं
आइ धरि सरकारक कठखेलमे
ओलंपिक खेल शुरू भेल
जनताक विकेट गिर गेल
देसक रूपैया खेल-खेलमे
मूड़ि-सूधि सभ सधि गेल
सभ शहरमे स्टेडियम बनि गेल
गाममे बेरोजगारी बढ़िगेल
आजाद देशमे के आजाद भेल
आजादीक झंडा फहरौने
की ओलंपिक तगमासँ
गरीबी-बेरोजगारी मिट गेल
जखन आजाद देशक जनता
अखनो बाटीमे भीख मंगैए
तखन सरकार ओलंफ्किमे
अरबो रूपैया किअए लगबैए

एतेक रूपैया खेती-उद्योग
आ रोजगारमे किअए ने लगबैए
जखन देशमे एतेक गरीबी छै
आलंपिककेँ की जरूरी छै
जखन देशक आत्मा
गाम-घरमे बसै छै
तँ गाम-वासी किअए
एतेक उपेक्षित छै
जे गामक लोक
नरकमे जीबै-मरै छै
गामवासीक ल्हु बेचि
सरकार ओलंपिक खेलै छै
ओइसँ गरीबकेँ की भेटलै
जखन खोदै छै पहाड़ तँ
मूस भागि जाइ छै।

मेघक बरिआती-

तारबतोर पूरबा बहै
दिन-राित बहै नै थके
गति मन्द पड़िते
गर्मी चढ़ल असमान
उसनियाँ करनाइ शुरू भेल
एहेन अचरज कहियो नै भेल
गर्मी भगबै ले
मेघक बरिआती शुरू भेल
भंडार कोणसँ गरजैत ढनकैत
सेना संगे मेघ धमकि गेल
आगू-आगू अन्हर बिहारि
पाछू संगे शीतल ब्यार
ढन-ढन ढमकैत बिजुरी चमकैत
मेघक बरिआती आबए लगल
देखते मेघक बरिआती
गर्मी जान बचा भागए लगल
मेघक बरिआती पछारैत गेल
झम-झम बर्खा बरसि गेल

गर्मीक परकोपसँ छुट्टी भेल
मेघक बरिआती घूमि घर गेल।



पुसक राति

पुसक राति
जाड़क मारल
थरथराइत देह
केना बचाएब प्राण।
फुइसक घर खोपड़ी सन
केना िबताएब पुसक राति
घरक टाट-ठाठ झलफाँसी
कनकनी हवा
छुबैए प्राण
घुराड़ी जरा-जरा
बचबै छी कहुना प्राण
मुदा धिया-पुताक
केना बचतै प्राण।
नार-पुआरक बिछौना
गोनरिक छै ओढ़ना
पजरेमे सटि
बिलाइ दुबकल छै

अबगरहमे छै ओकरो जान
सबहक मुँहें सुनै छी
पुसक रातिकेँ फूसि नै बुझियौ
कतेकोकेँ लइ छै प्राण
माघो मास अगुआएले छै
सुनि कऽ करेजा दरकैए
केना भेटत ऐसँ त्राण
आब लगैए नै बचत प्राण
के करत गरीबक कल्याण।

केना कहब भारत महान

जे देशक लेल तियाग करैए
ओकरे जिनगी नरक सन बनल-ए
गरीबक दुख कोइ नै बुझैए
हाथ रहितो नै छै कोनो काम
सूखल खेत नै भेलै धान
जिनगी बितै छै बैसल मचान
तौनी कोपीन पहिर जे रहलै
गाम-समाजकेँ पकड़िचललै
आफतमे मिल देशकेँ बचैलकै
गोली खा देलकै बलिदान
देश अजाद भैलै मुदा
दिन-दुखियाक दुख कियो ने बटलकै
गरीब बनल छै अखनो गुलाम
सभ धन सरकारे लेल छै
गरीब जनताक हकछिनलकै
आइ धरि नै भेलै गरीबक उत्थान
भुखले पेट तेजै छै प्राण
जे लहू पसिना सभ दिन बहबै छै

आगू बढ़ि सीना तानि
ओकरे दुख नै सरकार बुझलकै
ठेल देलकै नरकमे जानि
मरलकैँ मारैत रहलै
जानि बूझि बिनु लाभ-हानि
देशक समस्या बढ़ैत जाइए
सरकार ओकरा दबबैत जाइए
समस्या बनल अछि ज्वालामुखी समान
केना कहब भारत महान।

जीयब केना

जीयब तँ जीयब केना
दुनियाँ बदलि गेल जेना
चारूकात अधरमे कुकरमे
दिन-दहारे डाका पड़ैए
चौबटियापर इज्जति लुटाइए
गाम-शहरमे दारू बिकाइए
मानव पीब दानव बनैए
चोरी-डाका सिनाजोड़ी करैए
बीच बजार बलत्कारी होइए
कतए चलि गेल धर्मक नीति
जेनए देखियौ कुरितिये रीि‍त
जीयब तँ जीयब केना
दुनियाँ बदलि गेल जेना।

चलैत बाट डर लगैए
चौर सिपाही खेल करैए
सरकारक कानून उन्टा बनलए
ि‍नर्दोषी लेल जहल बनलए

दोषी घूमि-घूमि मौज करैए
सरकार अपराधीक बीच
गरीब जनता पीसाइत रहैए
सभ हत्यारा कंश बनलए
सरकार धृष्टराष्ट बनलए
अधिकारी मंत्री माल लुटैए
देशक जनता बौक बनलए
देखि कवि सोचमे पड़लए
जीयब तँ जीयब केना
दुनियाँ बदलि गेल जेना।।

मोनक आगि

पूर्णिमाक चान मलिन भेल
देखि तरेगन कनखी मारए।
सोलह श्रृंगार काएल
भेल मलिन।
पिया बिनु भेलौं विरहिन
रातिक फूल भोरे भेल मलिन।
मृग तृष्णामे मृग बौआइए
भटकि-भटकि जहिना परान गमबैए।
तहिना मन हमर भरमैए
मोन आगि रहि-रहि जड़ैए।
नै पिया पियास मुझाइए
सोलहकलासँ सजल चानकेँ
जहिना अन्हरा नै देखैए
तहिना परदेशिया पिया
अपनाकेँ विरान बुझैए।
िनरदैयाकेँ प्रेम केना जगतै
प्रेम बिनु दुनियाँ केना चलतै।

की चकबा चकबी जकाँ
साँझ पड़ैत बिछुड़ि पड़तै?
पूर्णिमाक चन देखि राति बितेतै
कहैए कवि राखू मोनमे धीरज
एक दिन मेटत अमृतसँ पियास
अपन मोनक आगिकेँ राखू दाबि।

मिथिलाक पियास

मिथिलाक पियास
नै मुझा सकल कोइ
जे मुझबैक प्रयासो केलन्हि
ओ सभ दिन ठकिते रहलै
मिथिलाक पियास बढ़ैत गेलै
अपन अश्रुकेँ पीबैत गेलै
पियाससँ मन व्याकुल भेलै
मिथिला तँ मैथिली लेल पियासल
मैथिली-रस पीबए चहै छलै
से रस कड़ुआएले छलै
पियासल मिथिला तड़ैप-तड़ैप
मैथिली लेल मड़ैत रहलै
कहैले मैथिली भाषा
सभ जनक भाषा छी
मुदा सभ दिन अपनेमे झगड़ैत रहलै
एक दोसरसँ छुबाइत रहलै
तँए मैथिलीक विकास नै भेलै

मकड़जालमे फँसल रहलै
तँए आइ धरि नै
मिथिलाक पियास मुझलै
जाधरि मिथिलामे मैथिली
सभ जनक भाषा नै बनतै
ताधरि नै मिथिलाक पियास मुझतै।

किअए छुबाइ छी

छुबैसँ जखन छुबाइ छी
तँए कि परिवर्त्तन देखै छी
काज जखन नै छुबाइए
देहक लहू पानि नै बनैए
नै किनको लकबा मारैए
तँ केना छुबाइ छी?
पानि छुबाइए मुदा दूध नै
पान-मखनसँ मान बढ़ैए
चुड़ा-दहीक भोग लगैए
भात देखि मुदा मन ओकिऐ
भेद-भावक जाल बना
मनुक्खकेँ मनुक्ख नै बुझै छी
समाजकेँ कमजोर केना छी
एतेक धिनौना कुकर्म करै छी
तैयो अपनाकेँ पैघ बुझै छी
गंगा नहाए पूजा करै छी
उन्टे कहै छी छुबाइ छी।

सूखल खेत आ भूखल पेट

सूखल खेत जरैत जजाति
खेतक दारिर देख-देख
दरकि करेजा जरैत रहलै
पानि बिनु खेत बज्जर भेलै
किसानक तकदीर जरलै
की खाए बचैते परान
महगीयो तेतबे छै
पंूजी पतीक हाथे
सरकार विकल छै
छियासठि बर्ख अजादीक भेल
देशक किसान कंगाले अछि
भरल नदी पानि बहति रहलै
नै बनलै बान्ह सुलीस गेट
केना जेतै खेतमे पानि
नै बनलै अखनि धरि नहर
केना उपजतै खेतमे धान
झुट्ठे वयान सरकार करै छै
नै भेलै खेत-विकासक काम

देशक लेल सभ दिन दैत रहलै
किसान अपन खून-परान
मुदा आइ धरि नै
सरकार कहियो देलकै धियान
केना हेतै देशक कल्याण
सूखल खेत भूखल पेट
केना बँचतै गरीबक परान।

के बँचेतौ तोहर जान

चिल्का कनैए दूध पीबैले
देखि दुखित माए कनैत बाजलि-
“सुक्खल देह हड्डीए देखाए
लहूक कतरा दुःखे लेल अछि
स्तनसँ दूधक फेनगीओ ने चलैए
जे तोरा चटा जीएबो
लहू पीब पेट भरतो तँ
पीब ले सभटा हमरा देहसँ।”
चिल्का नोर बहबैत
लगले सूरमे कनैत रहल
अस्सी बर्खक बुढ़िया दादी
ठेंगासँ ठेंगहति लग आबि
पोतासँ बाजली-
“अपना ने तँ गाए-महिंसक दूध अछि
जे पानि फेंटि पीआ दैतिओ
जीवितँए तँ हमरो कमा खिऐबितँए
एक हाथ सेवा सभ दिन करितँए
सबहक असिरवाद पबितँए

भगवानो तँ बेमूख बनल छौ
माए तोहर रोगही-टेटही छौ।"
मुदा,
चिल्का फकसीहारि कटैत रहल
माए ममता भावपूर्ण पुन: बाजलि-
"आन दूध बौआ नयनसँ नै देखलौं
ने जीसँ कहियो सुआद लेलौं
के देतौ दूध जान बँचबैले
नै बँचल छै धरतीपर इंसान
कथी पीआ कऽ तोरा जीएबो
से नइए कोनो इंजाम
माए-बेटा आ बुढ़िया दादी
छी तीनू तीन जान
तीनू मरि संगे जाएब श्मशान
एहेन स्वार्थी दुनियाँकेँ की देखब
जैठाम गरीव जीबै छै कुकुर समान।"

उन्टा साँस छोड़ैत चिल्का जेना
किछु बाजि रहल अछि
भूखक आगिमे छूटि रहल प्राण
नै कोइ अछि दयावान ऐठाम

चहुदिश देखै छी बदलल इंसान
रावण-कंशसँ पैघ शैतान।

आगिए आगि

सगरो लगल छै आगिए आगि
भागि पड़ा केतए जाएब
जेन्नैइ जाइ छी दइए झरकाए
तन जरैए मन जरैए
नैनक नोर सूखि जाइए
जेनए देखै छी आगिए-आगि
केनए भागि जाएब हौ भाय
सगरो लगल छै आगिए आगि।

मनक आगिसँ तन धधकैए
दहेजक आगिसँ समाज जरैए
चिन्ताक आगिमे दुनियाँ जरैए
भ्रष्टक आगिसँ भ्रष्टाचार धधकैए
महगीक आगिमे जनता जरैए
पेट्रोल-गैसमे देश जरैए
केनए भागि जाएब हौ भाय
सगरो लगल छै आगिए-आगि।

के मुझाएत ऐ आगिकेँ
सबहक लहू पानि बनल छै
जिनगी बनल छै जंजाल
झरकि-झरकि सभ मरै छै
के लगेलक ई सगरो आगि
केकरो काेइ नै देखै छै
केनए भागि जाएब हौ भाय
सगरो लगल छै आगिए-आगि।।

दू नजरि

रूप स्वरूप समरूप रहि
सभ मनुख मनुक्खे छी
एक्के लहू समरूप रहि
भेद कुभेद किए करै छी
हीन भावना राखि ताकि
एक-दोसरसँ छुबाइ छी
बात करै छी सर्वहीतक
सबहक दरद किए नै बाँटै छी
अपना स्वर्ग तकै छी
दोसरकेँ नरकमे ठेलै छी
सभ एक्के छी तँ दू नजरि किए तकै छी
रूप स्वरूप समरूप रहि
सभ मनुख मनुक्खे छी।

बात बनेलासँ नै बात बनत
कर्म बिना नै जिनगी चलत
अधर्मसँ नै कहियो काज चलत
सत् बिनु नै इंसान बनत

केना कहब के इंसान छी
बेइमानो कहब के शैतान छी
शैतान-बेइमानक बिचबिचौआमे
सभ इंसान ओझराएल छी।
ओझरी-पोटरीमे अँटैक रहि
भितरे-भीतर छुड़ी चलबै छी।
रूप स्वरूप समरूप रहि
सभ मनुख मनुक्खे छी।

राम विलास साहु- किछु विहनि कथा

राम विलास साहु

स्कूलक खिचड़ी

एकटा अभिभावक तमसा कऽ स्कूल पहुँचला। हेड मास्टरकेँ उपराग दैत बजला-

"पढ़ाइ-लिखाइ तँ जएह-सएह होइए। खाली खिचड़ीयेमे बेहाल रहै छी। जखनि धिया-पुता पढ़बे नै करतै तखनि तँ हाकिम-हुकुमक तँ बाते छोड़ू चपरासियो नै बनतै। एसँ नीक तँ प्राइवेटे स्कूल ने जइमे दूटा पाइये ने लगै छै, पढ़ाइ तँ नीक होइ छै। आइ तक ऐ स्कूलक बच्चा पढ़ि कऽ कोन नाम कमेलकै।"

मास्टर सहाएब शान्त भावसँ अभिभावककेँ समझबैत बजला-

"देखू, तमसाउ नै कोनो हम खिबै छी खिचरी। ई तँ सरकारक योजना छी। ऐ योजनासँ लाभो बहुत छै। निच्चासँ ऊपर धरि सभ माले-माल होइ छै।"

अभिभावक बजला-

"से केना?"

मास्टर सहाएब कहलखिन-

"सहीमे प्राइवेट स्कूलक बच्चा सभ पढ़ि-लिखि हाकिम-हुकुम बनै छै। आ ईहो देखैत हेबै जे ओ सभ माएबाप, गाम-समाजकेँ छोड़िएवं मातृभूमिकेँ बिसरि जाइए, बूझू बौर जाइए। से तँ ऐ स्कूलक बच्चामे नै हाेइए।" OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

चोर-सिपाही

माघ मास अन्हरिया राति। ओस-कुहेससँ हाथो-हाथ ने सुझैत। एकटा चोर चरि कऽ भागल जाइ छल। तखने एकटा सिपाही गस्तीमे आबि रहल छल। चोर सिपाहीकेँ देखिते भागल। चोर बूढ़ छल मुदा सिपाही बलंठ छलै। भागैत चोरकेँ रपटिकऽ पकड़लक सिपाही। पकड़ि हाजति लेने जाइ छल।

चोरकेँ डंढ़ासँ देह थरथराइ छल। मनेमन ईहो सोचै छल जे केना ऐ यमराजक हाथसँ बचब। थोड़े आगू चलि कऽ देखल जे सड़कसँ हटि एकटा घूर रहै। आगि देखिते चोर बाजल-

"सर, अहाँ एत्तै रहू आ हम ओइ धूरासँ कनी बिड़ी नेसने अबै छी?"

सिपाही कने सोचि कऽ बाजल-

"अरे, तूँ हमरा मूर्ख बुझै छेँ रे! आ जे तूँ भागि जेमे तँ हम तोरा पतालमे खोजबौ? चूपचाप एतए बैस हम अपनेसँ बीड़ी सुनगेने अबै छी।"ooo

ISSN 2229-547X VIDEHA

इमानदारीक पाठ

ननुआँ पुछलक कनुआँसँ-

"भैया आइ-काल्हि तँ गामोक स्कूलमे बड़ सुविधा भेटै छै आ पढ़ाइओ होइ छै तैयो विद्याथी सभ शहरक स्कलमे किए पढ़ै छै?"

कनुआँ जबाब देलक-

"गामक इस्कूलमे इमनदारीक पाठ आ शहरक इस्कूलमे रोजगारक पाठ पढ़बै छै।"

"से केना?" -ननुआँ पुन: पुछलक।

कनुआँ उत्तर देलक-

"गामक इस्कूलमे एहेन पाठ पढ़बै छै जे क्हुना साक्षर भऽ जाए, गाए-भौंस चराबए आ नमहर भेलापर हर-फार जोतए, खेती करए। अन्न उपजा कऽ अपनो खाए आ आनोकेँ खियाबए। ई छिऐ ने इमानदारीक पाठ मुदा शहरक इस्कूलमे विद्यार्थी सभकेँ रोजगारक पाठ पढ़बै छै। ओ सभ पढ़िलिखि रोजगार लेल आन-आन शहर चलि जाइ छै। अपन घर-परिवार आ समाज सेहो छुटि जाइ छै। समाजसँ बेमुख भऽ जाइ छै। आब तोहीं कह जे इमानदारीक पाठ के पढ़तै" ❍❍❍

बौआ बाजल

पढ़ल-लिखल बेरोजगार छी मुदा दिन केना कटै छल तकर कोनो सुधि-बुधि नै छल। ऊपरसँ परिवारक बोझ, आगू पढ़बाक इच्छा रहितो किछु नै कऽ सकलौं। एक दिन मनमे फुराएल जे किछु नेना-भुटकाकेँ पढ़ाएल जाए। अहुना तँ हम बुड़िआएले छी औरो बुड़िया जाएब।

एक दिन भोरमे बौआ-बुच्चीकेँ ओसारपर पढ़बै छलौं। दुनू बेरा-बेरी प्रश्न पुछए आ हम उत्तर दइ छेलिऐ। अहिना स्थितिमे बौआ पुछलक-

"लोक एत्ते मेहनतसँ किए पढ़ैए, जे पढ़ैए सेहो आ जे नै पढ़ैए ओहो तँ एक ने एक दिन मरिऐ जाइए?"

बौआकेँ हम समझबैत कहलिऐ-

"जीवन-मरण तँ प्रकृतिक निअम छी। ओ निरंतर होइत रहैत अछि।"

बौआ फेर पुछलक-

"तखनो लोक किए पढ़ैए?"

"मनुख पढ़ि-लिख ज्ञान अर्जित करैए आ ओइ ज्ञानसँ अपन जिनगीकेँ सुलभ बना असलीजिनगी जीबैए। लोक पढ़ि-लिखि डाक्टर-इंजिनियर, औफिसर, कवि लेखक आ उपदेशक इत्यादि बनैए। अच्छा ई कहह जे तूँ की बनबऽ?"

बौआ बाजल-

"हम पढ़ि-लिख कोनो काज कऽ सकै छी मुदा कवि-लेखक नै बनब। सभ कमा कऽ सुखमौजसँ जिनगी बितबै छथि मुदा कवि-लेखककेँ कोनो कमाइ नै होइत छन्हि। अखबारमे पढ़लिऐ जे मरला बाद पुरस्कार भेटै छै।"

ooo

ISSN 2229-547X VIDEHA

घूसहा घर-

मुखियाजी पंचायतक गामे-गाम आम सभाक बैसार लेल डोल्हो दियौलनि। गामक लोक सभ एकजुट भऽ आम सभामे पहुँचला। सभाकेँ संवोधित करैत मुखियाजी बजला-

"ऐ बैसारमे सभ किम्यो मिल ि‍नर्णए लिअए जे पंचायतक गरीब आ मसोमात,जिनकर घर टुटल-फाटल होइ वा रहबा योग नै होइ छै। ओइ व्यक्तिक सूची बनाएल जाउ। हुनका सभकेँ सरकार तरफसँ घर बनबैले इन्दिरा-आवास योजनासँ रूपैया भेटतनि।"

वार्ड सदस्यक सहयोगसँ मुखियाजी लग इन्दिरा आवासबला सूची पहुँचल। बिहानेसँ मुखिया जीक दलाल सभ सूचीमे नामांकित व्यक्तिसँ भेँट कऽ एक-एकटा फार्म दऽ कहि देलक जे फार्म भरि कऽ मुखियाजी लग जमा करै जाउ आ बैंकमे खाता सेहो खोलबा लइ जाउ। संगे संग पाँच हजारूपैआ सेहो दिअए पड़त। तखनि इन्दिरा आवास भेटै जाएत।

बहुत गोटे तँ अपन गाए-महि‍ंस-बकरी-छकरी-गहना-जेबर जेकरा जे गर लगलै बेँचि कऽ रूपैआ दऽ रूपैआ उठेलक। किछु आदमी एहनो छल जेकरा सकर्तानै भेलै ओ वंचित रहि गेल। बदलामे पाइबला लोक अपना नामे उठा लेलक।

किछु दिनक बाद रधिया मसौमात इन्दिरा-आवास ले फार्म भरि मुखिया जी लग पहुँचलीह। मुखियाजी फार्म पढ़ि बजला-

"पहिले इन्दिरा आवासमे पचीस हजार भेटै छलै आब चलिस हजार भेटै छै मुदा आगू भेटैबला साइठ हजार भेटतै। जइमे पच्चीसमे पाँच हजार आ अखनि चालिसमे दस हजार खर्चा लगै छै मुदा आगू साइठमे पनरह हजार लगतै।"

रधिया सुनिते कानि-कलपि कऽ अपन मजबूरी सुनौलकनि। मुखियाजी मुड़ी डोलबैत बजला-

"यइ काकी, हमरे केने‍े नै ने होइ छै, डेगे-डेग हाकिम-हुकुम बैसल छै। ओहो तँ कथ्यिा सोन्हा कऽ रखने रहै छै तेकरा की हेतै। आ हमरो कोनो दरमाहा भेटै छै हमहूँ तँ ओहीमे निमहै छिऐ। तँ ई हेतौ जे हम अपनबला नै लेबो।"

सुनि रधिया सभ बात सुनि परिस्थिति बूझि आपस आबि गेलीह।

बुधनी बुढ़िया गाममे सभसँ उमेरगर। जुआन्नि‍मे घरबला बाढ़िमे डुमि मरि गेलखिन। दूटा बेटाक संग बुधनी कहियो हिम्मत नै हारलि। संघर्ष करैत आत्म-ि‍नर्भरतापर धियो-पुतोकेँ सक्षत बनौने छथि। हलाँकि आर्थिक रूपे कमजोरे छथि।

एक दिन मुखिया जीक नजरि बुधनी बुढ़ियापर पड़लनि आ देखिते पुछलखिन-

"गामक बहुतो लोक सभ लाभ लेलक मुदा तूँ कोनो फारमो नै भरलीही?तोरा तँ दूटा लाभ भेटतौं। एकटा वृद्धा-पेंसन ओ दोसर इन्दिरा आवासक।"

बधनी बजलीह-

"ऐमे कोनो खर्चो-वर्चो लगैए?"

मुखियाजी-

"हँ, वृद्धा-पेंसनमे पाँच सए आ इन्दिरा-आवासमे पनरह हजार।"

बुधनी-

"हम ई लाभ नै लेब।"

मुखियाजी-

"किए नै लेब?"

बुधनी-

"घूस दऽ कऽ घर बनाएब तँ ओइ घूसहा घरमे रहैबला केहेन हेतै?"

मुखियाजी आ बुधनी बुढ़ियाक गप अपना घरक कोनचर लगसँ रधिया मसोमात सुनैत छलीह अपना मनकेँ बुझबैत बजलीह-

"इन्दिरा आवास किए घूसहा घर कहियो ने।"OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

जातिक भोज

आइ फूलबाबूक बेटाक बिआहक भोज अछि। गौआँ सबहककेँ आशा छेलनि जे ई भोज हमरो सभकेँ खेबाक अवसरि भेटत। किएक तँ ऐ भोजकेँ सफल बनेबाक लेल बहुतो जाति-वर्गक लोकक सहयोग छेलनि। कियो जारनि फारए तँ कियो साफसुथरा करए। कियो बर्तन-बासन माजै छल। गामक डोम बाँससँ बनलछिट्टा-पथिया, ढकैस, डाल-दौरा, चङेरा बना देलक। मालि फूल आ फूलक माला, कुमहार वर्तन-वासन, महला पोखरिसँ माछ मारि मनक मन ढेर लगौलक। कतेको करीगर आ हलुआइ सभ भोजक सामग्री बनबैमे भिरल छल। भोजमे सहयोग तँ सभ जातिक लोकद्वारा भेल। मुदा खाइक अवसर सभकेँ नै भेटलनि। ओतबे नै किनको नगद टाका देल गेल तँ किनको उधार रहलै आ किनको सीदहा भेटलै। मुदा भोज खाइक नोत सभकेँ नै भेटलै।

भोजक आयोजक भलहिं फूलबाबू छला मुदा करबारी तँ सभ जातिक लोक छेलखिन। किछु लोकक मनमे, जिनका सभकेँ नोत नै देल गेलनि। हुनका सबहक मनमे ईहो होन्हि जे काज जखनि नै छुआइ छै तँ पाँतिमे बैस खेलापर पाँति केना छुबा जेतै।ooo

ISSN 2229-547X VIDEHA

शिक्षाक महत

जीबछ घरजमैया छल। हुनकर पत्नी रधिया, माए-बापक एकलौती बेटी बड़ दुलारि छलि। रधियाक पिताकेँ चारि बीघा चास-बास, कलम-बाँस आ गाए-बड़द छल। खेतीबाड़ीसँ जिनगी चलै छेलनि। सोझमतिया रहने कोनो क्षल-कपट नै रहनि। पितमरू छला। परिवारमे अक्षरक बोध केकरो नै रहनि खाली जीबछ ट-ब कए कऽ साक्षर छल। रधियाक पिता जरूरति पड़लापर जखनि समाजमे कोनो लेन-देन करै छला तँ औंठेक निशान दइ छला।

एक साल एहेन समए भेलै जे इलाकाक इलाका बाढ़िपानिसँ दहि गेलै। ने नेवान करैले अन्न आ ने दाँत खोदहैले नार-पुआर भेलै। दोसर साल रौदी भऽ गेलै। एक तँ बाढ़ि मारल, दोसर रौदीक जरल। गरीब-गुरबाकेँ गुजर कटनाइ पहाड़ भऽ गेलै। केतेको परिवार तँ आन-आन गाम अपन-अपन कुटुमैती जा किछु दिन समए कटकल। मुदा ई सुविधा सबहक नशीव नै छेलै। गामक नम्हर जमीनदार, मालिक-गुमस्ता जे छला हुनका तँ पहुलके सालक पुरना अन्न बखारीक-बखारी भरल छेलनि। हुनका सभकेँ कोनो चिन्ता नै छेलनि। रधियाक माए-बाप बूढ़ रहने आन गाम जा केना काज करत। ओ दुनू गामेमे मलिकसँ कहियो मरूआ तँ कहियो धान तँ कहियो छाँटी चाउर कर्जा लऽ समए काटै छल। कर्जा देनिहार मालिक सभ विपतिक समैमे गरीबक शोषण सेहो करैत। एक मन अन्नक बदला दू मन आ दोसर साल चुकेलापर तीन मनक करारीपर कर्जा लगबैत। तेकर बादो औंठाक निशान एकटाकेँ के कहए जे तीन-तीनटा छाप कागतपर लइ छेलखिन। गरीब अपन परान बँचाएत आकि छापक परबाह करत। कर्जा खेनिहार थोड़े बुझै छल कि छाप देबै कागतपर आ हमर जमीन जत्था चलि जेतै तक्खापर।

एक दू साल समए बितलै। जीबछ अपन सौसुराइरिएमे सासु-ससुरक सेवा आ खेती-बाड़ी कऽ गुजर-बसर करै छल। किछु समए पछाति सासु-ससुर मरि गेलखिन। श्राद्ध-कर्मसँ निवृत भेलै छल आकि गामक मालिक-गुमस्ता लोकनि अपन-अपन कागत लऽ जीबछ ऐठाम पहुँचए लगला। कर्जा तँ करारीपर देने रहनि। ओ अवधि बीति गेल छल। कर्जा खेनिहार पहिले कागतपर छाप देने रहनि। ओइ कागतपर मालिक-जमीनदार लोकनि जमीनक खाता-खेसरा रकबा लिखि कऽ अपन नाओं कऽ लेलनि। गरीब सबहक जमीन मलिक-गुमस्ता हरपि लेलकनि। जइमे रधियाक जमीन सेहो चलि गेल। आब जीबछ-रधियाकेँ दूटा बेटी, एकटा बेटा आ परिवारक भरन-पोषण करनाइ कठिन भऽ गेल। जीबछ कमाइ खातीर बाहर चलि गेल। बाहरमे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नोकरी जल्दीए होइ छेलै आ बेसी दरमाहा सेहो भेटै छेलै। जीबछ बेसी पढ़ल तँ नै मुदा साक्षर छल। जइसँ शिक्षाक महत जिनगीमे केतेक होइ छै से मोने-मन महशूस करै छल।

जीबछ ट-ब-ट काए कहुना कऽ चिट्ठी लिखि घर पठेलक। ओइमे बेटा-बेटीकेँ पढ़बैले रधियाकेँ प्रेरित करैत कहै छल जे पढ़ाइमे जेते खरच लगत,हम कमाए कऽ पठाएब मुदा अहाँ धिया-पुताकेँ पढ़बैमे कोनो कोताही नै करब। रधियो मोने-मन सोचै छेली जे नीक लोक बनबाक लेल शिक्षाक बड़ महत छै। जे हम आ हमर माए-बाप जँए नै पढ़ल छेलौं तँए ने सभटा जमीन मलिक-गुमस्ता हरपि लेलनि। जखनि पढ़ल रहितौं तँ ई मुसिबत नै अबिताए। हम सभ जे केलौं से केलौं मुदा धिया-पुताकेँ जरूर पढ़ाएब। अइले हमरा जे परिश्रम आ तियाग करए पड़त ओ करब। ओ सभ दिन अपन धिया-पुताकेँ समैपर संगे जा स्कूल पहुँचाबए लगली।

रधियाक टोलेमे बुच्ची बाबू छला। बुच्ची बाबू अंचलमे बाड़ाबाबू छथि। छुट्टीमे घर आएल छथि। हुनका काल्हि भोरे ट्रेन पकड़ि ड्यूटीपर जेबाक छेलनि से रधियाकेँ कहलखिन-

> "रधिया, किछु सामान अधिक अछि। गाममे कएक गोटेकेँ कहलिऐ जे काल्हि भोरके ट्रेन पकड़ब से कनी सामान स्टेशनपर पहुँचा दिअ, मुदा कियो तैयार नै भेल। तूँ कनी पहुँचा दइ। हम तोहर बड़ उपकार मानबो।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

रधिया बाजलि-

"ठीक छै, कअए बजै चलब। कहिदिअ हम समान पहुँचा देब।"

बुच्ची बाबू बजला-

"सात बजे भाोरेमे चलब। किएक तँ आठ बजेमे ट्रेन छै। तीन-चारि किलो मिटर स्टेशन दूरो छै।"

रधिया भोरे उठि सभ काज कऽ जलखै बना धिया-पुताकेँ खाइले दऽ बजली-

"तँू सभ जल्दीसँ खो, आइ कनी पह्निहिए तोरा सभकेँ स्कूल पहुँचा दइ छियौ, तखनि बुच्ची बाबूक समान पहुँचबैले टीशन जाएब।"

एम्हर बुच्ची बाबू तैयार भऽ रधियाक बाट तकै छला। पाँचमिनट पछाति रधिया पहुँचली। बुच्ची बाबू तमसाइत बजला-

"रधिया, तोरा कहने छेलिओ साते बजै चलैले, देरी भऽ गेल। ट्रेन छूटि जाएत। तोरा कोनोचिन्ता नै।"

रधिया बजली-

"अपने तमसाउ नै। धीरे-धीरे बढ़ू हम समान लेने लफरल पिछ्डेपर आबि रहल छी। कनी धिया-पुताकेँ स्कूल पहुँचबैमे देरी लागि गेल।"

बुच्ची बाबू-

"पहिले सामान पहुँचा दइतैं, हमरा ट्रेन छूटि जाइत। एक दिन तोहर बेटा-बेटी स्कूल नै जेतौ तँ की हेतै। एक्के दिन कोनो पढ़ि कऽ कलक्टर बनि जेतौ?"

रधिया मोने-मन सोचए लगली, कहै छियनि आगू बढ़ैले से उठिए ने होइ छन्हि। हम तँ लफरल ह्निकासँ पहिनहि पहुँच जाएब। ट्रेन थोड़े छुटतनि। अपने बेगरते आन्हर छथि। अनेरे गछलौं।ooo

ISSN 2229-547X VIDEHA

ई छी हमर मजबूरी

जमुना बाबाक दुआरिपर सतसंग-प्रवचन होइ छेलै। भीड़ देखि हमहूँ ससरि कऽ गेलौं आ बैस सुनए लगलौं। प्रवचनकर्ता सेहो ज्ञानी आ विद्वान बूझि पड़ला। ओ मनुखक जिनगीक समरूपता बतबै छला। कहब रहनि जे सभ मनुख एक समान छी। सभ एके ईश्वरक संतान छी आ सबहक अत्मामे एके परमात्माक अंश रमि रहल-ए। मुदा हम तँ बड़ अंतर देखै छी। सबहक क्रिया-कलाप, रहन-सहन आ खानोमानमे बड़ पैघ भिन्नता अछि। केकरो बोरे-बोरे नून आ केकरो रोटीओपर ने नून। कोइ खाइतेखाइते मरैए आ कोइ खाइए बिनु मरैए। केकरो बीघा-बीघे कोठा-सोफा केकरो खोपड़ीओपर आफत। कोइ रौदेबसाते जरि-मरि काज करैए तँ कोइ ए.सी.मे मौजु करैए। कियो उड़न जहाजसँ देश-विदेशक यात्रा करैए तँ कियो पएरे चलि-चलि सड़केपर पराण तियागैए। किनको बिमारीक इलाज करोड़ोरूपैआसँ विदेशमे होइए तँ किनको पराण साधारण इलाज बिनु चलि जाइए।

ऐ सभ मुद्दापर सोच-विचार करैत जखनि प्रवचन खतम भेल तखनिहम हुनका लग जा कहलिऐ-

"महराज, अपने प्रवचनमे सभ मनुखकेँ समरूप बतौलियनि। मुदा हम तँ बड़ अन्तर देखै छी। से कनी फड़िछा कऽ कहियौ।"

प्रवचनकर्ता मधुर स्वरमे बजला-

"से तँ ठीके अहूँ कहै छी। हम जे प्रवचनमे कहलौं सेहो ठीक आ अहाँ जे कहै छी सेहो ठीक। सत् ई छै प्राकृति द्वारा जे सुविधा मनुखक लेल उपलब्ध छै ओ समरूप छै। मुदा मनुखक बीचमे जे अन्तर छै से अन्तर बेवस्थामे कमीक कारणे छै। मनुखे मनुखक दुश्मन छिऐ। जे जेते सवल छै ओ ओते दोसराक हक मारि बेवस्थाकेँ दुरूपयोग करै छै। जहिना हाथीकेँ दूटा दाँत होइ छै एकटा खाइबला आ दोसर देखबैबला तहिना बेवस्था करैबलाकेँ दू नजरि होइ छै। कथनी आ करनीमे अन्तर रखने छै। ऐ सभ बातक विचार-अनुभव मनुखकेँ अपने करए पड़तै। ओकर समाधान लेल सर्घषकरए पड़तै। बिनु मांगने तँ भीखो नै मिलै छै। ई तँ अहाँ अधिकारक बात करै छी। जौं हम प्रवचनमे समरूपताक बात नै कहबै तँ बेवस्था हमरा नै ने जीबए देत। अहाँ जकाँ जौं हमहूँ प्रवचनमे बाजब तँ कहिया ने हमरा जमपुरी पहुँचा देने रहितए। यहए छी हमर मजबूरी।"OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

बाल-बोध

दुखीलालकेँ दुखक पहाड़ माथसँ कहियो निच्चाँ नै भेल। बूढ़ माए-बापक सेवा टहल, तैपर सँ दूटा भलढ़ेरबा बेटी, छोट-छोट दूटा बेटा, पत्नी आ अपने कुल आठ बेक्तीक परिवार। पत्नी- फुलिया- परिवारक काजमे पिसाइत छेली। सासु-ससुरक टहल-टिकोरा आ सेवासँ पलखतिए नै। ऊपरसँ एकटा पोसिया गाए, एकटा भजैतिया बरद। मुदा दुनू बेटी चठेलगरि आ हुनरगरि छन्हि। घरक कमौआ दुखीलाल असकरे दिन-राति फिरिशान रहैए। घरक खर्चा पुगबे ने करैए जे पलखति मारत। खेतीओ-पथारी कम्मे भेने जने-बुत्तापर घरक खर्चा चलैत अछि। जखनि खेनाइओ-पीनाइओमे ढनसने तखनि बेटा-बेटी पढ़त केना? बर्खक पेसतरे दुखीक माए लकबा रोगसँ मरि गेली। पछाति बूढ़ बाप सेहो रोगसँ रोगा-सोगा दम तोड़िदेलकनि। श्राध-कर्म आ भोज-भात कर्जे हाथे भेल।

दुखीलालकेँ एक-सबा कट्ठा डीह, तीन कट्ठा चौमास आ छह-सात कट्ठा तीन-फसिला खेत छन्हि। जइसँ छह मास परिवारक गुजर चलै छन्हि। जन-मजदूरी कऽ शेष छह मास बितबैत अछि। मुदा अखनि तँ चौमास आ तीन-फसिला खेत दस हजारमे डेढ़ा सूदिपर भरना लगि गेल अछि। तैपर सँ दूटा बेटीक बिआहक अलगे। दुनू बेटा अखनि बाल-बोध! समस्या-पर-समस्या लदल जा रहल अछि। जँ चारि-पाँच साल खेत-भरना रूपैआक सूदि नै भरब तँ खेतो सूदिए तरे चलि जाएत। गाए बिकिल चरबाहियेमे कहबी सन हएत।

एक दिन दुखीलाल बैसारीए छल। किछु सोचैत छल आकि मनमे उपकलै खेतक भरना। जइ खेतसँ हमर बाप-दादा परिवार चलबै छला वएह खेत हमरो जीविका अछि। मुदा आब बूझि पड़ैए ओ खेत बिलटि जाएत। ऐ क्रममे सोचैत दुखीलाल टहलि मालिक प्रभूनाथ जीक दरबज्जापर पहुँचल। प्रभूनाथजी दुखीकेँ देखिते कहलखिन-

"आबह दुखी, एमकी बहू दिनपर भेँट करए एलह।"

दुखीलाल-

"मालिक, अहाँसँ कथी छुपल अछि। एतेक दिनसँ माए-बापक कहुना रीन उतारलौं मुदा अपनेक रीन केना चुकाएब से फुड़ेबे ने करैए।"

प्रभूनाथजी-

"केना चुकेबऽ से तँ तोहर काज छिअ। तइले हम किए मगजमारी करब। साले-साले हमरा रूपैआक डौरहा सूदि बढ़ैत जेतह। पाँच सालक कराड़ी छह, नै चुकेबहक तँ खेत छोड़ह पड़तऽ।"

दुखीलाल-

"मालिक, एना नै ने बाजू। खेतक नाओं सुनि हमर करेजा फाटि जाइए। ई खेत हमर खनदानक पूजी आ इज्जति छी। अपना जीबैत हम केना बिलटए देब।"

प्रभूनाथजी-

"से तँ तूँ ठीके कहै छह। रूपैआक सूदि जोड़ि चुकता कऽ दहक आ अपन खेत छोड़ा लैह।"

दुखीलाल-

"मालिक, अहींक दरबारमे जन-मजुरी कऽ जीब लेब। रहल अहाँक रूपैआक सूदि, तइ एबजमे हम अपन दुनू बेटाकेँ अहीं ऐठाम नोकरी रखि दइ छी। बँचलोहो बासि-बेरहट खा जीब लेत आ अहूँक काज

चलत। जाधरि अहाँक रूपैआक सूद-मूर नै सधत ताधरि अहींक दरबारमे नोकर बनिखटि देत। रूपैओक चुकता भऽ जाएत आ हमरो खेत छुटिजाएत।"

प्रभूनाथजी-

"कहलह तँ बड़ नीक। युक्तिओ तोहर नीमन छह मुदा... ।"

दुखीलाल-

"मािलक 'मुदा' किए कहलौं?"

प्रभूनाथजी-

"मुदा ऐ दुआरे बजलौं कि तोहर बेटा दुनूकेँ तँ देखने नै छी। अबोध अछि आकि बाल-बोध "

दुखीलाल-

"बल-बोध अछि। ठेकनगरि, एकबेर सेरिया कऽ बता देबै तँ दोसर बेर अढ़बए नै पड़त। देखिते-देखिते फुर्र-फुर्र काज कऽ देत। एक्को मिसिया असकतिया नै अछि।"

प्रभूनाथजी-

"बेस काल्हिए दुनूकेँ बजौने आबह। नैनसँ देखियो लेब आ काज करै जोकर अछि कि नै सेहो ठेकानि लेब।"

दुखीलाल-

"बेस मालिक, जाइ छी काल्हिए दुनूकेँ संगे नेने अबै छी।"

दुखीलाल अपन कर्तव्यकेँ हीन बूझि चिन्तामे डूमि गेल। हम केहेन बाप छी जे बाल-बोध बेटाकेँ भोजन-बस्त्र-शिक्षा इत्यादि पूर नै कऽ अपने बेगरते नोकरी लगबै छी। बेटा-बेटी राजाक हुअए आकि गरीबक सभकेँ अपन सन्तान दुलरूआ होइ छै। जखनि नमहर-बुधिगर-ठकनगर हएत तँ की कहत! हमर बाप केहेन निष्ठुर छथि जे हमरा संगे एहेन अन्याय केलनि। मुदा हमरा लग रस्ते कोन अछि। दोसर कोन उपए लगा सकब। मोनक बात मोनमे रखैत हृदैकेँ सक्कत कऽ बिहाने भने पनिपिआइ करा संगे नेने प्रभूनाथ जीक दरबार पहुँचल। दुनू बाल-बोध भाए गांगी-जमुनी, देखैओमे बड़ नुनुआगर, उमेरो आठदस बर्खक। प्रभूनाथ जीकेँ मनमे भेलनि बड़ नीमन टहलू हएत। मुदा अनठबैत बजला-

"दुखी दुनू बौआ तँ अखनि लेधुरिए अछि। हमरा ऐठाम कोन काज करत। ऐठाम तँ भीड़गर काज अछि।"

दुखीलाल बूझि गेल जे मालिक हमरा टाड़ि रहल अछि। बाजल-

"मालिक, छोट देखि झझुआउ नै। घरक छोट-छोट सभ काज करत। गाए-बरदक कुट्टी-सानी, दरबज्जा, माल-जालक बथान आ गोहाल घरक झार-बहार करत। गोबर-करसी ढुलढालकेँ हटाएत। अहूँकेँ कियो टहल-टिकोरा करैबला नै अछि सेहो अपन समझि करत। अहूँ अपने पोता सन बेवहार करबै। घरे ने बदलि जेतै मुदा रहतै तँ गामेमे। अहाँ लग रहत तँ हम निफिकिर रहब। ओना हमहूँ तँ अबिते-जाइते रहब।"

प्रभूनाथजी-

"दुखी, तँू ने गाम-घरक बात करै छह। लोक तँ शहर जाइले गाम गमौने अछि।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

दुखीलाल-

"मालिक की कहब, लोक तँ चिड़ै भऽ गेल अछि। जेतै पेट भरै छै ओतै खोंता बना रहैत अछि।"

प्रभूनाथजी-

"से ठीके। हमरे बेटाकेँ नै देखै छहक। गाम-समाज छोड़िहैदराबादमे रहैए। पावनितिहार तँ हम जाबै जीबै छी ताबे कहुना कऽ दइ छिऐ, नै तँ घरक देवताकेँ एक चुरुक पानिओ के देत।"

दुखीलाल-

"मालिक, छोड़ू दुनियाँ-दारीक गप-सप्प। हमरो काजपर जाइक अछि। और गप-सप्प दोसरो दिन हेतै। दुनू बाल-बोधकेँ सम्हारू।"

प्रभूनाथजी-

"दुखी, कनी आर बैसह। ई दुनू बौआ अनचिन्हार अछि। कनी बतिया लइ छी। नाओं बूझल रहत तँ समैपर समझा-बुझा देबै। नै तँ पोसो नै मानत। तँ तँ बुझबे करै छहक जे हमरासँ दुनू बौआकेँ खटपट तँ नै हएत मुदा हमर बुढ़ियाक सोभाव आ बेवहारकेँ तँ तूँ नीकसँ जनै छह,ओ मक्खि लाबा जकाँ दिन भरि फटफटाइते रहै छथि। तेहेन झनकाहि अछि जे केकरोसँ पटरीए ने खाइ छै। दिन-भरि पूजे-पाठमे लगल रहैए, दिनक भोजन राति आ रतुका भोरमे पाड़न करैए। जँ किओ लागिओ-भीड़ीओ देतै तँ कहत जे हमर सभ किछु छुबा गेल। एकबेर के कहए जे तीनतीन बेर नहाएत आ गंगाजलसँ शुद्ध करत। बेटो-पुतोहु आ पोता-पोती जखनि अबैए तँ देखिते बनरनी जकाँ लड़िते रहैए। तखनि हमर जिनगी केहेन अछि से बिनु कहने बूझि गेल हेबह।"

दुखीलाल-

"मालिक, ई तँ घरक बात छी। ओइमे हम किए दखल देब। मनुखो कोनो एक्के रंगक होइए। लोक अपन सुख-दुखक सृजन अपने करैए। अपजश दोसरकेँ लगबैए।"

बात समटैत दुखी दुनू बाल-बोधक दिस इशारा केलक।
प्रभूनाथजी पुछलखिन-

"बौआ, नाओं की छिअ?"

दुनू भाँइ एक्के स्वरमे अपन-अपन नाओं बाजल-

"बुधन-बेचन।"

प्रभूनाथ-

"मुँह सूखल छह। किछु खेबह?"

दुनू भाँइ बाजल-

"नै, पनिपिआइ कऽ लेने छी।"

प्रभूनाथजी-

"तोहर बापक कहब अछि जे दुनू भाँइ अहीठाम काज करत से करबहक ने?"

बुधन-

"हँ।"

प्रभूनाथजी-

"अपन काज कहुना सभ करैए मुदा बीरानक काज किओ करैए आ कियो नै करए चाहैए।"

बुधन-

"हम अपन आ बीरानमे नै बुझै छी। काज करब।"

दुखीलाल बूझि गेल जे बात बढ़ि जाएत। बातकेँ सम्हारैत बाजल-

"मालिक गरीबक बेटाकेँ कथी परीक्षा लइ छिऐ। जे कहबै से करत।अबेर भऽ गेल काजपर जाइ छी।"

प्रभूनाथजी-

"कनी दरमाहा फरिआ लैह जे पछाति कोनो मुहाँ-ठुठी ने हुअए।"

दुखीलाल-

"मालिक, दरमाहा की हेतै। अहाँसँ रूपैआ दस हजार नेने छी। सालमे पनरह हजार हएत। पँच-पँच सए रूपैआ महिनाक हिसाबसँ दुनू भाँइक एक हजार भेल। पनरह महिामे अहाँक रूपैआ फरिया जाएत, नै मानब तँ एक मास बेसीए खटिदेत। हमरो खेत छूटि जाएत। ने अहाँकेँ दिअ पड़त आ ने हमरा। दुनू भाँइ अहींक दरबारमे खाएत-पीअत काज अहाँक अनुकूल करत।"

प्रभूनाथजी-

"ठीक छै मानि लेलिअ। तँू तँ हमरोसँ तेज निकललह। हम तँ बाल-बोधक फेरमे अबोध बनि गेलौं।"OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

अबिसवास

काल्हिए नूनू बाबूक बेटीकेँ बिआह छी। नूनू बाबू बिआहक सरमजान सबहक ओरियानमे लगल छला। गिरहत आ सम्पन्न परिवार रहितो रूपैआक अभाव छेलनि। चारि लाख टाका, पाँच भरि सोना आ एकटा मोटर साइकिल देहेजपर बिआह फाइलन भेल छल। दुलहा इंजीनियरिंग कौलेजक छात्र। सुखी सम्पन्न परिवार। दुलहाक पिता मोहन बाबू एस.डी.ओ. औफिसक बाड़ाबाबू। नीक कमेनेखटेने छथि। तँए नूनू बाबू अपन बेटी सुचिताकेँ हुनके घरमे कुटमैती करैक निर्णए नेने छथि।

नूनू बाबू बहुत परियास करैत तीन लाख रूपैआ मोटर साइकिल, दू भरि सोना तिलकक समैमे चुकता कऽ देलनि। शेष तीन भरि सोना बेटीक गहनास्वरूप बिआहे दिन देब आ एक लाख रूपैआ जे बँकियौता रहि गेल ओ बेटीक नामे एल.आइ.सी.बीमामे जमा अछि। जे दू तीन मास पछाति मिलत सेहो चुकता कऽ देब। तिलक भेला पछाति बिआहक दिन ठेकल गेल। मुदा दुलहाक पिता मोहन बाबू बड़ लोभी। ओ मोनेमोन सोचलनि, पुतोहु जखनि हमर हएत तँ एल.आइ.सीक रूपैआ आइ ने काल्हि हमरे हएत। बँकियौता रूपैआ बिआहसँ पहिने लऽ लेब तँ लाभमे रहब। मोहन बाबू बिआहसँ एक दिन पहिने समाद नूनू बाबूक घर पठौलनिजे हमर एक लाख टाका बँकियाहा अछि ओ रूपैआ चुकता करि दिअ तखने बरियाती जाएत नै तँ अहाँ जानू। नूनू बाबू समाद सुनि जेना देहपर बज्जर खसि पड़ल। ओ सेचमे पड़ि गेला। होश सम्हारि मोहन बाबूसँ भेँट कऽ बड़ विनती केलनि। अखनि ऐ लेल माफी दिअ। हम बेटीबला छी। बहुत चीज-बौसक ओरियान करए पड़त। तैपर सँ बरियातीक सुआगतमे सेहो बहुत खरच हएत। मुदा मोहन बाबू नूनू बाबूकेँ एकोटा बात नै सुनलकनिआ ने आँखिक नोर पोछलकनि। तखने नूनू बाबू बजला-

> "खैर, नै मानब तँ अहाँ बरियाती लऽ कऽ आउ,हम दरबज्जेपर बिअाहसँ पहिने रूपैआ बरियातीए घरमे चुकता करि देब तखनि बिआह करब।"

नूनू बाबू खेत भरना रखि रूपैआक ओरियान केलनि। बरियाती समैपर आएल। सबहक सुआगत भेल। दरबज्जेपर सबहक सोझहेमे एक लाख टाका दुलहाक पिता- मोहन बाबूकेँ चुकता कऽ देलनि। दुलहाक परिछन भेल, वरमालाक काज शुरू हएत तखने एकटा नव बातक चर्चा भेल जे दुलहा पहिने दुलहिनकेँ देखता। पसिन भेला पछाति ने बरमाला आ सेनूरदान हएत। ऐ बातसँ कन्याँ पक्षमे खलबली मचि गेल आ आक्रोश सेहो बढ़ि गेल। अन्तमे निर्णए भेल जे ठीक छै पहिने कन्याँ देख लेल जाउ। तखने आगूक काज हएत।

दुलहिन चित्रा तँ पहिनेसँ वरमाला लेल सजले छलि। एकटा कोठलीमे दुलहाकेँ लोकनियाँ संगे बजौल गेल। ओही कोठलीमे दुलहिन चित्रा सहेलीक संगे आएल। चित्रा इण्टर पास पूर्णिमाक चान सन सुन्नरि। दुलहा देखि कऽ मोने-मोन खुश भेला। किछु गप-सप्प सेहो भेलै। तखने चित्रा बजली-

> "की यौ दुलहाजी, हम अपनेकेँ पसीन भेलौं?"

दुलहा मुस्की मारि पीठे लागल बजला-

> "हँ, की हमहूँ अहाँकेँ... ।"

चित्रा तुरन्ते जवाब देलक-

> "नै अहाँ हमरा पसीन नै छी। तँए आब ई बिआह हम किन्नौं ने करब। चित्राक ई निर्णए सुनि सखी-बहिनपा, माए-बाप,समाजक बुजुर्ग इत्यादि बहुतो गोटे समझेलकनि मुदा एकेठाम चित्रा जिद्द धेने रहलि जे ऐ वरसँ हम बिआह नै करब।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

दरबज्जा बरियाती-सरियातीसँ भरल छल। ई बात सुनिते लगले सनसना कऽ अगिलग्गी जकाँ चारू दिस सौंसे गाम पसरि गेल। बहुतो बुजुर्ग लोकनि दुलहिनक पिताकेँ बुझा-समझा कऽ कहलकनि मुदा चित्रा अपन दृढ़पर अरल रहलि। चित्रासँ कारण पूछल गेल। कहलक-

"जखनि दुल्हाकेँ अपन माए-बाप आ सर-समाज किनकोपर बिसवास नै छन्हि तँ ओ हमरापर बिसवास केना करता आ हम केना हुनकापर बिसवास करब। दोसर बात जे जिनकर पिताजी दहेजक खातिर जमीन आइज्जत बेचबा सकै छथि तखनि ओ हमरो बेचि सकैत छथि किने। तँए हम बीख पीब मरि जाएब मुदा एहेन अविसवासी आ दहेज रूपी दानवक बेटा संगे बिआह नै करब। ऐसँ नीक तँ हम ओहेन दुल्हा जे गरीबे किएक ने हएत, तिनकासँ करब, जे अपन इज्जतक संगे दोसरोक इज्जत करत।"

चित्रा सहेली संगे कोठलीसँ निकलि गेलि। दुल्हा आ लोकनियाँ सभकेँ ओही कोठलीमे बन्न कऽ ताला लगा आँगन आबि गेलि। बिआह नै भेल। ई खबरि रातिए भरिमे चौतरफा पसरि गेल। पंचैतीक बैसार भेल। पंच लोकनि बिआह हेबाक बहुत परियास केलनि मुदा चित्रा अपन संकल्पपर अडिग रहलि। अन्तमे जे दहेजक लेन-देन आ सुआगतक खर्च भेल रहै ओ सभटा आपस भऽ जाए। दुलहिनक पिता नूनू बाबू बजला-

"चारि लाख टाका, दू भरि सोना, मोटर साइकिल संगे सुआगतमे दू लाख टाका खर्च भेल अछि से सभटा आपस कऽ दिअ तखने हिनका सभकेँ छुट्टी भेटतनि। नै तँ हम कानूनक शरण लेब आ दुनू बापूतकेँ जहल कटेबनि।"

सभ पंचक विचार भेलनि। बात तँ उचिते ने नूनू बाबू कहै छथि। कोनो जबरन जुर्माना तँ नै...।

दुल्हाक पिता मोहनबाबू छह लाख टाका, सोना, मोटर साइकिल घरसँ मंगबा नूनू बाबूकेँ पंचक बिच्चेमे आपस कऽ देलकनि। तखनि हुनक बेटाकेँ कोठलीसँ बाहर निकालि देल गेल। जहिना आन गामक चोटाएल कुकुर नांगरि दबौने दुलकी दैत अपन गामक बाट पकड़िसोझहे-सोझ जाइत रहैए तहिना सभ कियो विदा भेला।

चित्रा पिताक मुरझाएल मुँह देखि बाजलि-

"बाबूजी, अहाँ एक्को पाइ चिन्ता नै करू। हम मनुख संगे बिआह करब। पढ़ल-लिखल कम्मो रहत तइले एको पाइ चिन्ता नै। एही खातिर ने एते झमेल होइए। एक्को पाइ चिन्ता नै करू।"ΟΟΟ

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.comकेँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txtफॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/ संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

 ५ जुलाई २००४ केँ http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु